सिरपुर उत्खनन

सिरपुर अथवा श्रीपुर (21^0 21 ' 12" उत्तरी अक्षांश $82^0$11' 13" पूर्वी देशान्तर) रायपुर से लगभग 85 किलोमीटर उत्तर–पूर्व में राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 53 (रायपुर–सम्बलपुर) पर महासमुन्द जिले के अन्तर्गत, महानदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहां पर सर्वप्रथम सागर विश्वविद्यालय की ओर से 1953–54 से 1955–56 के मध्य स्व. श्री मोरेश्वर गंगाधर राव दीक्षित के दिशानिर्देशन उत्खनन कार्य प्रारम्भ किया गया जिसमें प्रमुख रुप से आनन्द प्रभुकुटी बुद्ध विहार एवं स्वास्तिक बुद्ध विहार के अवशेष प्रकाश में आये। लगभग चार दशक पश्चात् पुनः श्री अरुण कुमार शर्मा, सम्प्रति पुरातत्त्ववीय सलाहकार, छत्तीसगढ शासन द्वारा सिरपुर में उत्खनन कार्य प्रारम्भ किया गया जिसमें 1999–2000 में भिक्षुणी विहार, 2000–2001 में राजमहल परिसर, 2003 में तिवरदेव विहार, 2003–04 में बालेश्वर महादेव मन्दिर, 2006 में सुरंग टीला एवं 2007–2011 में बाजार क्षेत्र के साक्ष्य प्रमुख है। इस पुरास्थल की विस्तृत आख्या श्री ए. के. शर्मा द्वारा तैयार की जा रही है।

SIRPUR EXCAVATION

Sirpur or Sripura (Lat. 21^0 21' 12" N, Long. $82^0$11'13" E) is located 85 km. in the North-East side of Raipur and in the right bank of river Mahanadi in District Mahasamund. The first excavation was carried out by the Sagar University in the year 1953-54 to 1955-56 under the guidance of Late Shri Moreshwar Gangadhar Rao Dixit and in such excavation the famous remains like Anand Prabhukuti Buddha Monastery and Swastik Buddha Monastery were retrieved. After the almost 04 decades, Shri Arun Kumar Sharma, presently Archaeological Advisor, Government of Chhattisgarh, started excavation at Sirpur in that Lady Monastery of 1999-2000, Palace Complex of 2000-2001, Tivardeo Monastery of 2003, Baleshwar Mahadev Temple of 2003-04, Surang Tila of 2006 and Market Area of 2007-2011 etc. The comprehensive report on Sirpur excavation is being prepared by Shri A.K.Skarma.

Excavated Structures at Sirpur